हर जीव में ईश्वर का वास

सुथरे शाह जी (जलज्योति शाह जी) जहाँ भी जाते कुछ लोगों को इकट्ठा करते व लोगों को उपदेश देते। हर जीव में ईश्वर का वास है। इसलिए सबसे प्रेम करो। वे कहते–

न मस्जिद से गरज मुझको
न मन्दिर से मुझे मतलब
मुझे तो हर इंसां में
खुदा मालूम होता है ।

एक बालक ने सुथरे शाह जी से पूछा- ये लोग परस्पर लड़ते क्यों हैं?सुथरे शाह जी बोले- 'बेटा ये मनुष्य नहीं हैं। इनमें कोई हिन्दू है कोई मुसलमान, कोई पंजाबी है, कोई गुजराती, कोई मराठी है तो कोई बंगाली। यदि ये मनुष्य होते तो एक ही देश में रहकर आपस मे क्यों लड़ते?'

हिन्दू है कोई और मुसलमान है कोई
मै पूछता हूँ तुम में है इन्सान कोई।

सुथरे शाह जी के पहरावे को देखकर हिन्दू व मुसलमान असमंजस में पड़ जाते थे। वे सिर पर अक्सर लखनवी टोपी पहनते (जो नवाब पहना करते थे)। कुर्त्ता व धोती या लूंगी पहनते। उनके कन्धे पर अंगोछा (परना) रहता। उनके चेहरे पर बढ़ी हुई दाढ़ी के बारे में कोई पूछता तो हंसते हुए कहते, 'मुझे भगवान ने दाढ़ी के साथ ही इस दुनिया में भेजा है।' हाँ, वे अपने गुरु दरबार में हमेशा पगड़ी पहनते।

एक बार वे कुछ लोगों के साथ बैठकर वार्तालाप कर रहे थे। संयोग से वहाँ

काज़ी साहब भी पहुँच गए। उन्होंने सुथरे शाह जी से पूछ लिया- आप बताइए, आप कौन हैं? हिन्दू या मुसलमान। सुथरे शाह जी बोले- 'न मैं हिन्दू न मुसलमान। हिन्दू आखन राम राम मुसलमान रहमान।' सुथरे शाह जी (जलज्योति शाह जी) ने उत्तर दिया। यह वचन सुनकर काज़ी को बहुत गुस्सा आया कि यह फकीर अपने आप को रहमान या अल्लाह कहता है। उसने सोचा कि इसकी परख करनी चाहिए कि क्या यह सच में ही भगवान का प्यारा है और सबको उसका रूप समझता है या इसके दिल के अन्दर हिन्दू मुसलमान का भेद-भाव है। यह परख करने के लिए काज़ी ने कहा- 'सुथरे शाह जी, क्या आप सभी को भगवान का रूप समझते हो?' 'हाँ, सभी उस ईश्वर का ही रूप हैं चाहे वे इन्सान हो या पशु-पक्षी। हर जीव में ईश्वर का ही वास है।' सुथरे शाह जी ने उत्तर दिया।

'क्या तुम हमारे साथ बैठकर खाना खा सकते हो?' काज़ी ने कहा। 'जी हाँ इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है जो हम मिलकर भोजन खाएँ। मैं तो सभी के साथ मिलकर भोजन कर सकता हूँ चाहे वह किसी भी जाति का क्यों न हो।' सुथरे शाह जी ने कहा। काज़ी ने दूसरे दिन दोपहर का भोजन अपने साथ करने का निमन्त्रण दे दिया। 'सुथरे शाह जी' ने इसे स्वीकार कर लिया। सुथरे शाह जी दूसरे दिन काज़ी के घर एक कुत्ते को लेकर पहुँच गए। काज़ी ने और भी ५-७ सरकारी कर्मचारियों को बुलवा लिया। उनमें से एक ने कहा, 'शाह साहिब! क्या यह कुत्ता आपका है?' सुथरे शाह जी ने कहा, 'जी हाँ, यह भी अल्लाह का ही एक रूप है। हम जहाँ जाते हैं यह भी हमारे साथ जाता है। इसको भी हमारे साथ खाना खाने की आदत पड़ गई है।'

उस कर्मचारी ने विनोदपूर्वक कहा, 'हाँ साहिब क्यों नहीं, यह बड़ा स्वामी भक्त जानवर है। इसके साथ जितना प्यार करो उतनी ही वफा करता है। यह जितना वफादार जानवर है उतना इन्सान नहीं।' सुथरे शाह जी हंसकर कहने लगे, 'बहुत अच्छे, बहुत अच्छे। आप सच कहते हो, यह तो अपने मालिक

के लिए जान तक देने को तैयार हो जाता है और अपने मालिक के लिए अपनी जान की भी परवाह नहीं करता।' इस प्रकार बातें हो ही रही थीं कि उनमें से एक मुसलमान जो बहुत मज़ाकिया था, कहने लगा- 'क्यों शाह साहब। यह तो आपने सुना ही होगा, कुत्ता सो जो कुत्ता पाले। कुत्ता पालने वाला भी तो कुत्ता ही होता है।'

सुथरे शाह जी ने कहा, 'कुत्ता नहीं होता, कुत्ता हो जाता है, जब वह इस कुत्ते की वफा का गुण धारण कर ले। जो इन्सान होकर भी कुत्ते की वफा का गुण धारण नहीं करता वह तो कुत्ते से भी बदत्तर है। जो इन्सान होकर किसी लालच वश, हाकिम या काजियों के पीछे-पीछे घूमते हैं, असल में तो वही कुत्ते होते हैं, यदि वह वफ़ा नहीं जानते तो वह कुत्तो से भी गए बीते हैं। तुमने पंजाबी में तो यह सुना ही होगा कि–

कुत्ता सो जो कुत्ता पाले, कुत्ता दोहता नाने हाले।
कुत्ता बहन के घर भाई, कुत्ता सोहरे घर जवाई।
वड्डा कुत्ता सोई मान, सोहरा फिरे जवाई नाल।
लालच करके मगर जो फिरदा, असली कुत्ता ओ दर दर दा।

यह उस कर्मचारी की बहुत बेइज्जती थी, क्योंकि वह हमेशा काज़ी के पीछे-पीछे घूमता रहता था। दूसरे कर्मचारी सुनकर हँस पड़े पर वह शर्मिन्दा हुआ। इतनी देर में खाना खाने का समय हो गया। काज़ी साहब ने फर्श पर ही चादर बिछवा दी। सभी के लिए खाना मँगवा लिया ताकि सभी मिलकर एक ही थाली में खाना खा सकें। जब सभी खाना खाने लगे तब सुथरे शाह जी ने अपना कुत्ता भी पास बिठा लिया और कुत्ते को खाना खाने के लिए आगे कर दिया। कुत्ता खाना खाने लग गया। यह देखकर काज़ी साहिब और दूसरे आदमियों को बहुत गुस्सा आया उन्होंने कहा कि इस कुत्ते ने सारा खाना खराब कर दिया है, हम यह खाना नहीं खा सकते।

सुथरे शाह जी ने कहा, 'अरे अल्लाह के बंदो! यह भी तो अल्लाह का ही रूप है। क्या इसको अल्लाह ने नहीं बनाया? यदि आप मेरे कुत्ते से घृणा करते हो तो क्यों मेरे साथ खाना खाते हो? आपने निमन्त्रण दिया था, इसलिए आओ, सब मिलकर खाना खाएँ।' 'हम आपके साथ बैठकर खाना खा सकते है पर कुत्ते के साथ नहीं खा सकते'—काज़ी ने कहा।

'मैं तो हर रोज़ इस कुत्ते के साथ बैठकर खाना खाता हूँ, आज आपके साथ बैठकर खाना खाने का निश्चय किया था और आपके कुत्ते के साथ भी खाना खाने को तैयार था, आप पीछे क्यों हट गए?'—सुथरे शाह जी ने कहा। इस तरह काज़ी और उसके साथियों पर खुली चोट थी। उनको साफ तौर पर कुत्ता कहा जा रहा था। वह समझ तो गए पर सुथरे शाह जी ने बात कुछ इस तरह कही थी कि वे कुछ जवाब न दे सके। काज़ी ने कहा, ' शाह साहिब हम आपके साथ खाना खाने को तैयार थे, किन्तु यदि कुत्ते को अलग से खाना दे दिया जाता तो क्या फर्क पड़ता।' 'फर्क तो कुछ नहीं पड़ता परन्तु यह कुत्ता इतना वफादार है कि मेरे साथ ही बैठकर खाना खाता है अकेला नहीं खाता इसलिए मैं विवश हूँ।' सुथरे शाह ने कहा।

काज़ी ने और उसके साथियों ने कुत्ते की झूठन खाने से इन्कार कर दिया। सुथरे शाह जी ने कहा, 'काज़ी साहिब, आप कुत्ते से घृणा करके खुदा के बनाए जीवों का अपमान कर रहें हैं। मैं आप सबके साथ और आपके कुत्ते के साथ भी खाना खा सकता हूँ तो आप क्यों नहीं खा सकते। अच्छा, यदि आप हमारे साथ खाना नहीं खा सकते तो हम जाते हैं।' यह कहकर सुथरे शाह जी उनका सारा खाना जो कुत्ते ने झूठा कर दिया था, वहीं छोड़कर कुत्ते के साथ वापिस आ गए। काज़ी और उसके साथी उन्हें कोई उत्तर न दे सके।